By Dr Sharad Suman Mishra
Study notes for
Semester 4 Political Science

शीत युद्ध का अंत

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दुनिया दो गुटों में विभाजित हो गई एक गुट का नेता संयुक्त राज्य अमेरिका था तो दूसरे गुट का नेता सोवियत संघ ।दोनों महा शक्तियों के आपसी संबंधों को शीत युद्ध के रूप में संबोधित किया जाने लगा ।शीत युद्ध एक ऐसी स्थिति थी जिसे उष्ण शांति के रूप में जाना जाने लगा ऐसी स्थिति में ना तो पूर्ण रूप से शांति रहती है और ना ही वास्तविक युद्ध होता है बल्कि शांति एवं युद्ध की बीच की अस्थिर स्थिति बनी रहती है यह ऐसी स्थिति है जिसमें दोनों पक्ष परस्पर शांति कालीन कूटनीतिक संबंध कायम रखते हुए भी परस्पर शत्रु का भाव रखते हैं और सशस्त्र युद्ध को छोड़कर अन्य समस्त उपायों का सहारा लेकर एक दूसरे की स्थिति दुर्बल बनाने का प्रयत्न करते हैं यह कूटनीतिक दांव पेच से लड़ा जाने वाला युद्ध था जिसमें महा शक्तियां एक दूसरे से भयभीत रहती थी द्वितीय विश्वयुद्ध्योतर after second world war सोवियत और अमेरिकी संबंधों को चार युग में विभाजित किया जा सकता है
1शीत युद्ध
2दितान्त
3दूसरा शीत युद्ध तथा
4शीत युद्ध का अंत

शीत युद्ध समाप्ति की दिशा में निम्नलिखित समझौते शिखर वार्ताएं और घटनाक्रम उल्लेखनीय है ।
जेनेवा वार्ता - जेनेवा में दो महारथी रीगन और गरबाच्योव मिले । 2 दिनों तक 19 एवं 20 नवंबर 1985 उनके बीच निजी और गोपनीय बातचीत चली। दोनों महा शक्तियों के बीच 6 साल बाद बातचीत हुई । जिनेवा शिखर वार्ता में दोनों महा शक्तियों के नेता जिन मुद्दों पर सहमत हुए वे इस प्रकार हैं-

परमाणु युद्ध कभी नहीं लड़ा जाना चाहिए । कोई भी एक पक्ष अपना सैनिक वर्चस्व कायम करने की कोशिश नहीं करेगा । हथियारों की होड़ पर काबू पाने के लिए दोनों पक्ष वार्ता को और तेजी से आगे बढ़ाएं तथा दोनों पक्ष अपने-अपने परमाणु हथियारों के जखीरे में 50% कमी करें । रासायनिक हथियारों पर पूर्ण प्रतिबंध हो।

रीगन- गरबाच्योव शिखर वार्ता 11 से 12 अक्टूबर 1986 को रिकजाविक (आइसलैंड) में अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन तथा सोवियत नेता मिखाइल गरबाच्योव के बीच 2 दिन की शिखर वार्ता संपन्न हुई। स्टार वॉर्स पर रीगन के अड़े रहने से शिखर वार्ता विफल हो गई। रिकजाविक से रवाना होने के पूर्व रीगन ने कहा कि स्टार वॉर्स कार्यक्रम को प्रायोगिक शोध एवं परीक्षण तक सीमित रखने का सोवियत का प्रस्ताव उन्हें मान्य नहीं ।गरबाच्योव ने कहा कि अमेरिका को विश्वास है कि वह स्टार वॉर्स के जरिए सोवियत संघ पर सैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करने के कगार पर है अतः रीगन ने उन समझौतों को भी मानने से इनकार कर दिया जिन पर पूरी सहमति हो चुकी थी और सिर्फ संधि पत्र पर हस्ताक्षर होने बाकी थे।

सोवियत संघ अमेरिका शिखर वार्ता तथा आई एन एफ संधि पर हस्ताक्षर 8 से 10 दिसंबर 1987 -- सोवियत संघ के नेता गरबाच्योव और अमेरिका के राष्ट्रपति रीगन के बीच वार्ता हुई। यह तीसरी वार्ता थी दोनों नेताओं ने 9 दिसंबर 1987 को एक ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर किए इसे आई एन एफ संधि कहा जाता है। इस संधि से दोनों देश मध्यम एवं कम दूरी के प्रक्षेपास्त्र नष्ट करने को सहमत हो गए ।। i.n.f. संधि एक ऐतिहासिक संधि है। यह एक महत्वपूर्ण एवं अद्भुत विकास है। यह विश्व शांति की दिशा में एक रचनात्मक कदम है।
इसका महत्व इस प्रकार है

यह महा शक्तियों के संबंध में रचनात्मक सुधार का प्रतीक है।

यह दोनों महा शक्तियों के युद्ध को रोकने का दृढ़ संकल्प है।

यह निरस्त्रीकरण संबंधी पहला समझौता है।

यह परमाणु निरस्त्रीकरण की ओर पहला कदम है।

इसके तहत परमाणु प्रक्षेपास्त्र ओं की एक श्रेणी को पूर्णता नष्ट कर दिया जाना तय हुआ।

इसने निरस्त्रीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट को दूर कर दिया । दोनों महान शक्तियां जांच की प्रक्रिया और मॉनिटरिंग पर राजी हो गई।
रीगन एवं  गरबाच्योव दोनों ने शिखर वार्ता को तनाव कम करने की दिशा में ऐतिहासिक बताया।